द्रव्य
प्रस्तुतकर्ता –
यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

द्रव्य

गुणों के समूह को
द्रव्य कहते हैं

द्रव्य कितने होते हैं?
छह

कौन-कौन से

जिसमें ज्ञान पाया जाए
जीव किसे कहते हैं?

पुद्गल किसे कहते हैं?

जिसमें स्पर्श,
रस, गंध, वर्ण
पाया जाए

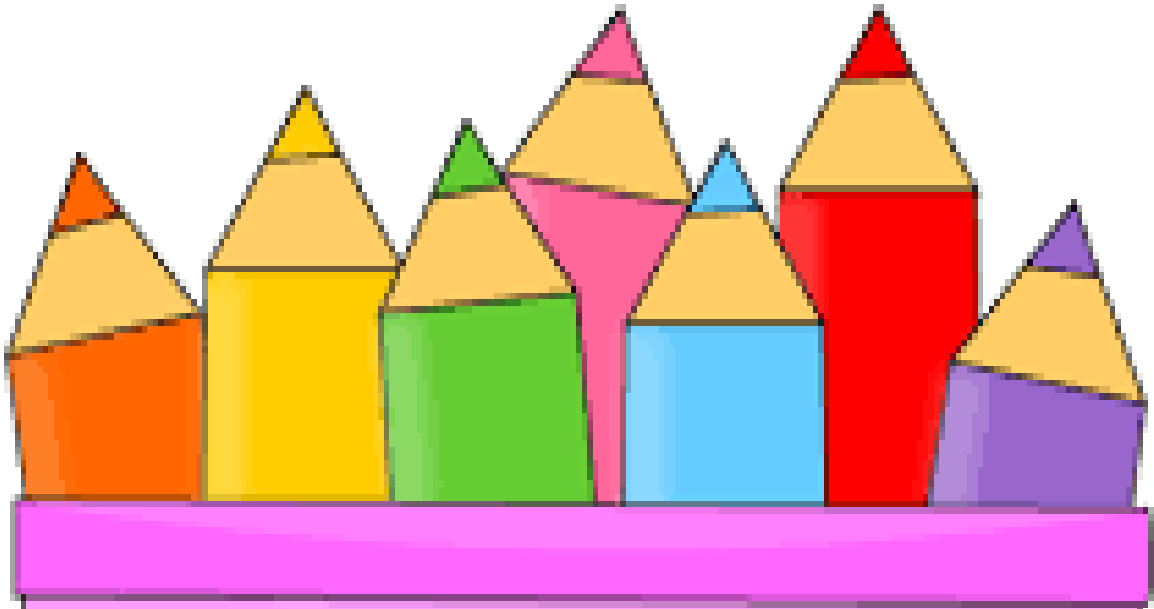

- यहाँ पूजा-पाठ को धर्म नहीं कहा है
- ये धर्म-द्रव्य की बात है
- जो स्वयं चलते हुए जीव और पुद्गल को चलने में निमित्त है

- जैसे- स्वयं चलती मछली को जल

अधर्म-द्रव्य किसे कहते हैं?

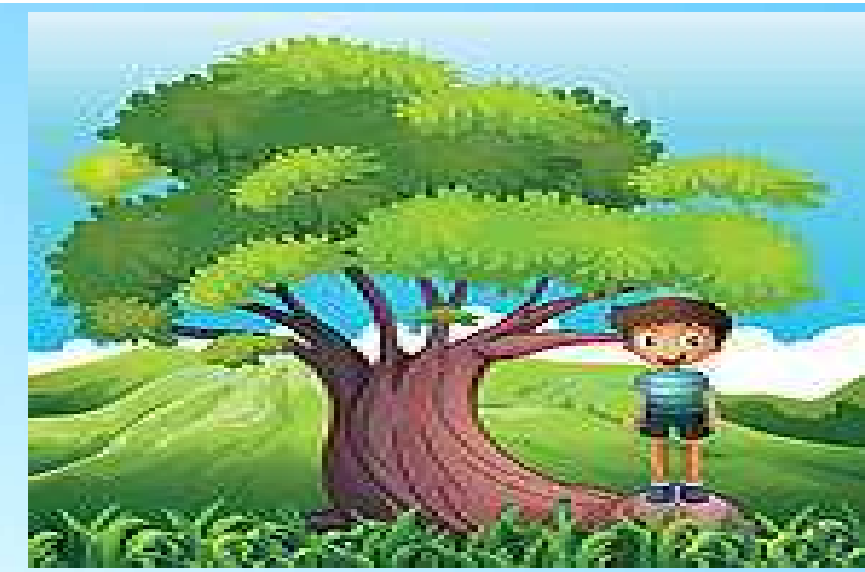

गमनपूर्वक
ठहरने वाले
जीव और पुद्गल को
जो ठहरने में निमित्त है

जैसे- पथिक को पेड की छाया

धर्म और अधर्म-द्रव्य कहाँ हैं?

सम्पूर्ण लोक में –

- तिल में तेल के समान फैले हुए है

• ऊपर नीला दिखने वाला कौनसा द्रव्य है?
• पुद्गल
• फिर आकाश क्या है?
• जो सभी द्रव्यों को रहने में निमित्त हो
आकाश द्रव्य

ऐसी कौनसी जगह है जहाँ जगह नहीं है?
आकाश का दूसरा नाम जगह ही है
इसलिये आकाश सर्वत्र है
आकाश
द्रव्य

काल-द्रव्य किसे कहते हैं

जो समस्त द्रव्यों के परिणमन (परिवर्तन) में निमित्त हो

काल द्रव्य की अवस्था का नाम समय है

अथवा

दिन, घण्टा, महिना, वर्ष आदि का नाम काल है

कौन-सा द्रव्य किसको निमित्त होता है?

द्रव्य	किसको निमित्त?	किसमें?
धर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल को	चलने में
अधर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल को	ठहरने में
आकाश	सभी को	रहने में
काल	सभी को	बदलने में

पुद्गल = रूपी द्रव्य

1
पुद्गल को छोडकर शेष पाँच द्रव्य
2
अरूपी अमूर्तिक हैं
3
अरूपी = जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण न हो

अजीव द्रव्य कितने है?

पाँच

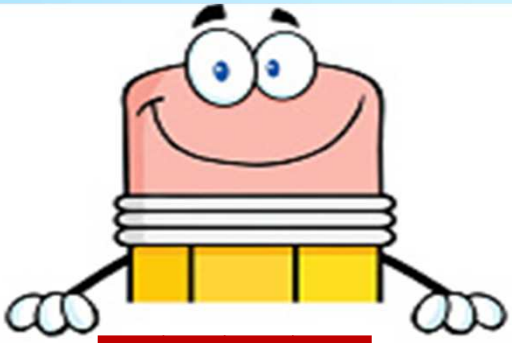

पुद्गल द्रव्य

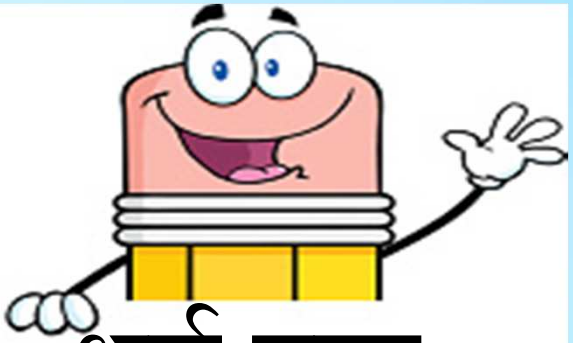

धर्म द्रव्य

	दिखने वाला	अजीव
जीव	नहीं	नहीं
पुद्गल	हाँ	हाँ
धर्म	नहीं	हाँ
अधर्म	नहीं	हाँ
आकाश	नहीं	हाँ
काल	नहीं	हाँ

द्रव्य कितने हैं?

जाति अपेक्षा द्रव्य छह हैं

प्रत्येक द्रव्य कितने-कितने हैं?

जीव - अनंत

पुद्गल - जीवों से अनंतगुणे अर्थात् अनंतानंत

धर्म, अधर्म, आकाश – एक-एक

काल - असंख्यात

जीव के भेद

संसारी

कर्मसहित जीव,
जैसे- हम

मुक्त

कर्मरहित जीव,
जैसे- सिद्ध

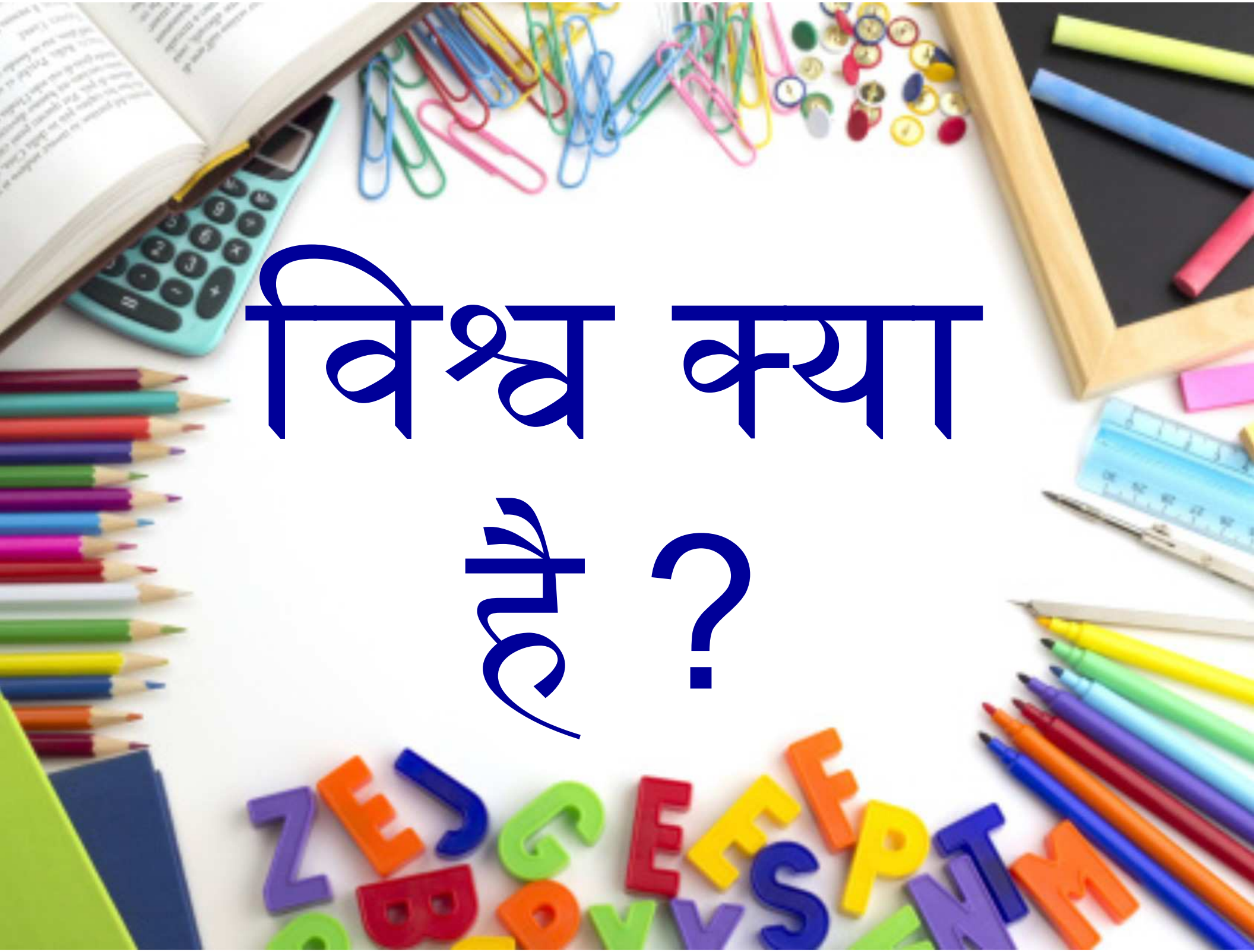
विश्व क्या है ?

छह द्रव्यों के समूह को विश्व (दुनियाँ) कहते हैं
इन छह द्रव्यों के सिवाय दुनियाँ में और कुछ नहीं है

विश्व को
बनाने वाला
कौन है?

क्या भगवान हैं?

नहीं

तो फिर विश्व को बनाने वाला, चलाने वाला, नष्ट करने वाला कौन है?

कोई नहीं !!

विश्व अनादि अनन्त स्वनिर्मित है

भगवान दुनियाँ को जानते हैं, बनाते नहीं

आखिर दुनियाँ में जो कार्य होता है, उनका कर्ता कोई तो होगा

- प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने कार्य (पर्याय) का स्वयं कर्ता है
- कोई किसी का कर्ता नहीं
- जो ऐसा मान लेता है, वही आगे चलकर भगवान बनता है।

द्रव्य को जानने से लाभ

- हम भी एक द्रव्य हैं, गुणों के पिँड हैं - इससे दीनता की भावना मिटती है
- विश्व-व्यवस्था का ज्ञान होता है
- गृहीत मिथ्यात्व मिटता है
- ऐसा ज्ञान होता है कि -
  - भगवान कर्ता नहीं हैं
  - मैं भी कर्ता नहीं हूँ
  - जगह मेरी नहीं है
- परिणमन का कारण काल द्रव्य है
- आदि अनेक लाभ है